# ''गुरमत संगीत की शबद कीर्तन चौकी परम्परा का वर्तमान स्वरूपः

# –विशेषकर संधिप्रकाश रागों के संदर्भ में''

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग आगरा से संगीत में पी.एच.डी. की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

(2017)


शोध निर्देशिका

प्रो. डॉ. सुधा सहगल

शोधार्थिनी

प्रभजोत कौर मान

सगीत विभाग

विभागाध्यक्षा

प्रो. (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सत्संगी

कला संकाय प्रमुख

प्रो0 जे0के0 वर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

(संगीत विभाग)

कला संकाय

दयालबाग एजुकेशन इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

## ➢ भूमिका –

गुरमत संगीत सिक्ख धर्म के गुरू साहिबानों द्वारा निर्देशित सांगीतिक शबद गायन को कहा जाता है जिस में गुरू का मत, आज्ञा एवं विचार सम्मिलित होते है, दूसरे शब्दों में गुरमत संगीत अर्थात गुरबाणी को संगीत के साथ गायन करना भी, शबद कीर्तन कहा जाता है। गुरू साहिबानों ने शबद कीर्तन को जनसाधारण से जोड़कर उन्हें आध्यात्मिकता से जोड़ा है। सिक्ख धर्म के प्रथम गुरू श्री गुरू नानक देव जी ने सिक्ख धर्म की नीव रखी तथा शबद कीर्तन को रागों एवं तालो का आधार प्रदान किया। सिक्ख धर्म के पाँचवें गुरू श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरबाणी का संग्रह कर के गुरबाणी को रागों, तालों, गायनशैली, गायन पद्धति व समय सिद्धांत सहित श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में स्थापित किया।

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरबाणी को संगीत के साथ जोड़कर शबद कीर्तन में चौकी कीर्तन का प्रांरम्भ किया तथा इस कीर्तन पद्धति के निर्वहन करने का नियम तथा सिद्धांत भी बनाया एवं क्रियात्मक रूप देकर इसे स्थापित तथा विकसित किया चौकी कीर्तन में गायन का एक निर्दिष्ट एवं व्यवस्थित शास्त्रीय नियम होता है। जिसे रागियों द्वारा सम्मिलित रूप से नियम एवं समयानुसार किया जाता है।

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने गुरमत संगीत के अंतर्गत चौकी गायन हेतु समय को चार प्रहरों में विभाजित करके चार वर्ग निर्मित किए। इन प्रहरों में रागाधारित, तालाधारित शबद कीर्तन गायन को शबद कीर्तन चौकी नाम दिया गया। यह सभी चौकियाँ नौ भागों में विभाजित है। तथा समय सिद्धांत के अनुसार निर्वाहित भी की जाती है जो इस प्रकार है–

- **प्रथम चौकी :**

- **तीन पहरे की चौकी** :– समय के अनुसार रात्रि के 2.30 बजे से आरम्भ पहली कीर्तन चौकी जो 3.30 बजे तक चलती हैं। इसके अंतर्गत समय के अनुसार रागों का गायन किया जाता है जैसे – जैजैवंती, सोरठ आदि।

- **द्वितीय चौकी** :–

- **आसा की वार** :– समय के अनुसार रात्रि के तीन पहरे की चौकी के बाद आसा की वार की चौकी लगती है, जिसका समय रात्रि के 3.30 से आरम्भ होने वाली अमृत वेला प्रातः काल 6.30 तक होता है। इस शबद कीर्तन चौकी में राग भैरव रामकली, प्रभाती, आसा, गौड़ी, देवगंधारी का गायन किया जाता है। आसा की वार की चौकी में राग आसा को गाने की प्रथा है।

- **तृतीय चौकी** :–

- **बिलावल की चौकी** :– समय के अनुसार इस कीर्तन चौकी का समय सुबह 6.40 से लेकर 8.00 बजे तक होता है। इस चौकी में बिलावल के सभी प्रकारों को गाया जाता है।

- **चतुर्थ चौकी** :–

- **आंनद की चौकी** :– समय के अनुसार इस कीर्तन चौकी का समय सुबह 8.00 से 9.00 बजे तक का होता है। तथा समय के अनुसार राग गाए जाते है।

- **पंचम चौकी**:–

- **चरण कमल की चौकी** :– इस शबद कीर्तन चौकी का समय दिन के प्रथम प्रहर के बाद आरम्भ होता है। इसके अंतर्गत राग तोड़ी गूजरी, बिलावल देवगंधारी, सांरग, सूही, बडहंस का गायन होता है।

➢ **षष्टम् चौकी** :–

- **सोदर की चौकी** :– इस शबद कीर्तन चौकी का समय सांय कालीन 5.40 बजे से लेकर 7.15 बजे तक होता है। इस कीर्तन चौकी के अन्तर्गत सायं कालीन संधिप्रकाश राग श्री गउड़ी (गौरी), धनाश्री, मालीगौड़ा, मारू, बैराड़ी का प्रयोग होता है।

➢ **सप्तम् चौकी** :–

- **आरती की चौकी** :– आरती की चौकी का समय सोदर की चौकी के बाद आता है जो रात को 7. 40 से आरम्भ होती है। जिसमें निर्धारित राग में आरती का गायन किया जाता हैं।

➢ **अष्टम् चौकी** :–

- **कल्याण की चौकी** :– इस शबद कीर्तन चौकी का समय रात्रि के प्रथम प्रहर के अंत होने पर आरम्भ होता है। इसके अंतर्गत राग कल्याण, नटनारायण, बिहागड़ा, केदारा, गौड़ा, कान्हड़ा, मांझ, मलहार व बसंत आते है।

➢ **नवम् चौकी**:–

- **कान्हडे की या कीर्तन सोहिले की चौकी** :–

इस कीर्तन चौकी के अतंर्गत समय के अनुसार रात्रि के राग आते है। इस कीर्तन चौकी का समय समाप्ति से पूर्व का होता है।

जिस प्रकार श्री गुरू अर्जुन देव जी ने समय सिद्धांत निर्धारित कर कीर्तन चौकियों का निर्माण किया, सम्भावना है कि समय विभाजन प्रणाली को इन्ही शबद कीर्तन चौकी से बल मिला हो। उसी सिद्धांत के अनुसार कीर्तन के चार चरण अथवा नियम भी निर्धारित किए जिन्हे कीर्तन चौकियों की गायन पद्धति भी कह सकते है। इन चौकियों में कीर्तन 16 तालों में निबद्ध होता है। इन चौकियों की गायन–वादन पद्धति का निर्वहन इस प्रकार किया जाता हैं। –

- **शान/लहरा** :– कीर्तन शुरू करने से पहले शान या लहरा बजाने की परम्परा है। यह सुर–साज़ बजाने वाला साज़िदा बजाता है तथा साथ ही तबला–वादक तबले पर अपनी कला का प्रदर्शन करता है।

- **मंगला चरण** :– मंगलाचरण जिसका गायन समय के रागानुसार किया जाता है। यह वदंना के समान होती है, जो राग और ताल में बंधी होती है। भारतीय संगीत में इसे बड़े ख्याल की शैली कहा जाता है।

- **शबद गायन** :– इसके अंतर्गत ध्रुपद, बड़े ख्याल या छोटे ख्याल के समान शबद गायन किया जाता है। इसमें रागी अपनी शास्त्रीय संगीत की कला का प्रदर्शन कर सकते है।

- **पउडो (पौडो)** :– अंत में उसी राग से संबधित वार की पउड़ी गायी जाती है। इसे रीत भी कहा जाता है।

इस प्रकार शबद का राग ताल में गायन करने के पश्चात् राग रामकली में दर्ज आंनद साहिब की पउड़ीयाँ गाकर रागी कीर्तन समाप्त करते है।

वर्तमान में इस चौकी कीर्तन परम्परा का निर्वाह अत्यन्त अल्प हो गया है। आश्चर्य है ऐसी समृद्ध पारम्परिक एवं सांगीतिक गायन शैली जिसमें गायन परम्परा शास्त्रीय नियमों के अनुसार निर्वाह

की जाती है आज अप्रचलित हो रही है। कतिपय गुरूद्वारों में इनका प्रयोग हो रहा है किंतु अधिकांशतः रागियों द्वारा इनका प्रयोग नियमानुसार नहीं हो रहा है।

➢ **सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण** :–

शोध को संचालित करने से पूर्व विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोधकर्त्री द्वारा किया गया जो इस प्रकार है–

- **शोध प्रबन्ध** :–

1. गुरबाणी संगीत की विभिन्न गायन शैलियों का अध्ययन और उनका भारतीय संगीत के साथ सबंन्ध – डॉ– अजीत सिंह –गुरू नानक देव विश्वविद्यालय – 1997

2. गुरमत संगीत की कीर्तन परम्परा : – संगीत वैज्ञानिक अध्ययन –डॉ वरिंदर कौर – पंजाबी यूनिवर्सिटी – 2003

3. पंजाब की संगीत परम्परा में गुरमत संगीत का स्थान – डॉ राजेन्द्र सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला – 2001

4. श्री हरिंमदिर साहिब जी की कीर्तन परम्परा : – एतिहासिक परिपेक्ष – डॉ कमलजीत सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला – 2004

5. गुरमत संगीत की राग परम्परा : – संगीत वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ मनप्रीत सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला– 2011

6. गुरमत संगीत की शबद कीर्तन रचनाएँ : – विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ जबरजंग सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला –2012

- **शोध पत्र :–**


1. हिन्दुस्तानी संगीत पर सिक्ख धर्म तत्व उसके सिद्धातों का प्रभाव – रेनू सचदेव धार्मिक परम्पराएँ एवं हिंदुस्तानी संगीत – राधा पब्लिकेशन – 1999
2. गुरमत संगीत में प्रयुक्त शास्त्रीय विद्या – डॉ गुरनाम सिंह – शबद सरोकार – मालवा साहित्य कला मंच, पटियाला, पंजाब– 2007
3. गुरू काव्य में संगीत का महत्व – डॉ0 वरयाम सिंह – खोज पत्रिका, गुरमत काव्य विशेष अंक– जग्गी, रतन सिंह– पंजाबी यूनिवर्सिटी–पटियाला – 2001
4. आसा की वार का सांगीतिक अध्ययन – जगीर सिंह – गुरमत मीमांसा – गुरमत प्रकाश धर्म प्रचार कमेटी S.G.P.C. अमृतसर–1982
5. चौथे प्रहर के बाद कीर्तन किस समय होना चाहिए – तजिंदर सिंह – अमृत वेला – गुरमत प्रचार सभा पटियाला, पंजाब – 2009
6. गुरबाणी सांगीतिक परिपेक्ष्य – अमृत पाल कौर – शबद संचार – रवि सहित प्रकाशन अमृतसर–2003
7. गुरबाणी काव्य रूप और गायन शैलियाँ – अंर्त सम्बन्ध – अमृत पाल कौर – गुरवाणी अध्ययन नव परिपेक्ष – निशांत प्रकाशन, फरीदाबाद–1990
8. गुरबाणी कीर्तन में निर्धारित रागों का महत्व – सतनाम सिंह – गुरमित प्रकाश – धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर – 2005
9. गुरबाणी संगीत – दर्शन सिंह नरूला – पंजाब का संगीत विरसा और विकास – Punjabi Writers Co-Opreative Industrial Society Ltd.-1995

10. गुरबाणी संगीत – डॉ दर्शन सिंह – स्वरूप, स्थिति एवं समाधान – The Sikh Art and Architecture – Department of Guru Nanak Sikh Studies Punjab University – 1987

11. कीर्तन परम्परा को गुरू अर्जुन देव जी की देन – डॉ0 जतिन्दर कौर – गुरमत प्रकाश – धर्म प्रचार कमेटी, S.G.P.C. – अमृतसर – 2011

- **पुस्तकें**

1. गुरमत संगीत की ऐतिहासिक विलक्षणता – डॉ जसबीर कौर – भाई चतर सिंह जीवन सिंह बाजार माई सेवा, अमृतसर– 2006

2. गुरमत संगीत परम्परा – मंजीत कौर – Twenty First Century Publications, Patiala-2005

3- गुरमत संगीत सागर – दयाल सिंह – गुरू नानक विद्या भंडार ट्रस्ट, नई दिल्ली– 2003

4. सिक्ख संगीत रीत (आसा की वार) – चंदन, कुलवंत सिंह (प्रो0) – भाई चरत सिंह जीवन सिंह – बाजार माई सेवा, अमृतसर – 2003

5. सिक्ख संगीत का विकास – डॉ0 देवन्द्रि सिंह, History research Department, Khalsa College - Amritsar - 1986

6. गुरमत संगीत परम्परा – मंजीत कौर – Twenty First Century Publications, Patiala-2005

7. गुरमत में संगीत का महत्व – प्रो0 अमरजीत सिंह – Guru Nanak Dev Mission, Patiala- 1992

8. गुरमत संगीत का संगीत विज्ञान – पदम डॉ0 वरिंदर कौर – अमरजीत सहित प्रकाशन – पटियाला – 2005

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के पश्चात् यह ज्ञात हुआ है कि इतनी समृद्ध चौकी कीर्तन परम्परा का उल्लेख किसी भी साहित्य में विस्तृत रूप से नही है। इस परम्परा का सैद्धान्तिक स्वरूप तो फिर भी यत्र–तत्र आंशिक रूप से प्राप्त होता है किन्तु क्रियात्मक स्वरूप का सर्वथा अभाव है। आश्चर्य है कि शास्त्रीय संगीत की परम्परा को अपने में समाहित किए हुए, रागों का शुद्ध स्वरूप समेटती हुई समय सिद्धांत का पालन करती हुई, शास्त्रीय ताल बद्ध चौकी कीर्तन परम्परा पर शोध के क्षेत्र में कार्य नही हुआ है। अतः शोधकत्री द्वारा इस चौकी कीर्तन परम्परा को गहराई से जानने के लिए, गुरमत संगीत में निर्धारित रागों का गहन अध्ययन करने की दृष्टि से, राग एवं ताल बद्ध शबद गायन को उजागर करने की दृष्टि से, संधिप्रकाश रागों पर निर्धारित शबद गायन को विशेषरूप से चौकी कीर्तन पर सूक्ष्म निरीक्षण हेतु निम्न विषय का चयन किया गया है।

- **विषय कथन**

**‘‘गुरमत संगीत की शबद कीर्तन चौकी परम्परा का वर्तमान स्वरूपः**

**– विशेषकर संधिप्रकाश रागों के सन्दर्भ में**

- **विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या**

- **गुरमत संगीत –**

  - गुरबाणी की रचनाओं को सांगीतिक नियमों के अन्तर्गत श्रद्धा– भाव के साथ गायन करने का नाम गुरमत संगीत है।

– हरिमंदिर साहिब की संगीत कला–दर्शन सिंह नरूला– 1995

- **शब्द :–**

  ❖ पुं0 (सं0) एकवचन, ध्वनि, आवाज़, अक्षरों या वर्णो से बना हुआ और मुँह से उच्चरित अथवा लिखा जानेवाला वह संकेत जो किसी भाव, कार्य या बात का बोधक होता है, सार्थक ध्वनि, लफ्ज़, सन्तों के बनाए हुए पद।

  ❖ किसी आप्त पुरूष की कही हुई ऐसी काव्य–रचना जिसमें कुछ उपदेश भी हों, जैसे कबीर या श्री गुरू नानक देव जी के शब्द।

–लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश– आचार्य रामचन्द्र वर्मा– संशोधन तथा परिवर्धन डॉ0 बदरीनाथ कपूर

- **संगीत :–**

❖ संज्ञा, एकवचन कंठ वाध्य संगीत कला, गाना बजाना गायकी गायन वादन, गीत संगीत, नृत्य, गान

–हिंदी थियासारस–संदर्भ खण्ड – अरविन्द कुमार–कुसुम कुमार

- **वर्तमानः–**

  ❖ एकवचन, विद्यमान, मौजूद, जीवधारी, जिंदा धूमने वाला फिरने वाला। (पु) व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक जिसके द्वारा सूचित किया जाता है कि क्रिया अभी चल रही है और समाप्त नही हुई

  – संस्कृत शब्दार्थ – कौस्तुभ– रामनारायण लाल

  ❖ आधुनिक, उपस्थित, जीवित, वर्तमान, वर्तमान कालीन, समक्ष।

  –समानान्तर कोश हिन्दी थियासारस अनुक्रम खण्ड– अरविंद कुमार, कुसुम कुमार

- **परम्परा :–**

  ❖ स्त्री (सं0) न टूटने वाला क्रम, अनुक्रम; अटूट सिलसिला; क्रमबद्ध समूह या पंक्ति; प्रथा, प्रणाली वशंगत सतंवि; वध।

– मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश–कमल प्रकाशन

- **संधि प्रकाशः–**

  ❖ दिन –रातः संधि काल –समांतर कोश– हिन्दी थिसारस अनुक्रम खण्ड– अरविन्द कुमार, कुसुम कुमार

- **रागः–**

  ❖ रंग, वर्ण, संगीत की स्वर योजना विशेष

  – तुलसी शब्दकोश–द्वितीय भाग –आचार्य बच्चूलाल श्रवस्थी 'ज्ञान'– आचार्य कुलापाध्याय, कालिदास अकादमी उज्जैन (म0प्र0)

➢ **अध्ययन की आवश्यकता :–**

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की आवश्यकता चौकी कीर्तन परम्परा को गहनता से जानने में है। यह शोध कार्य संगीत के क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक सिद्ध होगा क्योंकि इसके द्वारा चौकी कीर्तन परम्परा उजागर हो सकेगी।

इस परम्परा को संगीत एवं शिक्षा के क्षेत्र में सभी के सम्मुख लाना अत्यन्त आवश्यक है जिससे की विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को इसमें निहित रागों एवं तालों का क्रियात्मक स्वरूप ज्ञात हो सके। यह परम्परा जितनी सांगीतिक अर्थों में आवश्यक है उतनी ही धार्मिक अर्थों में भी आवश्यक है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से इस परम्परा में संत गुरूओं की वाणी के सद्‌विचार तथा दर्शन को भी उजागर करना अंत्यत आवश्यक है। निर्धारित रागों में शबदों का गायन कैसे किया जाना चाहिए?

किस प्रकार किया जाना चाहिए? कितना किया जा रहा है? संधिप्रकाश रागों में निबद्ध शबदों का गायन वर्तमान में किस प्रकार किया जा रहा है। यह भी जानना आवश्यक होगा। इस परम्परा के ताल पक्ष को भी गहनता से जानने की अत्यंत आवश्यकता है।

- **प्रस्तावित शोध का महत्वः–**

प्रस्तावित शोध का महत्व चौकी कीर्तन परम्परा के धार्मिक, सांगीतिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करने में है। शास्त्रीय संगीत प्रधान रागों एवं तालों पर आधारित चौकी कीर्तन परम्परा का महत्व व्यापक एवं सूक्ष्म रूप से प्राचीन भारत की परम्पराओं में से एक है जिन्हे स्पष्ट करना अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

- **अध्ययन के उद्देश्य :–**

- गुरमत संगीत के इतिहास को जानना
- गुरमत संगीत की विभिन्न शैलियों को खोजना तथा अध्ययन करना
- गुरमत संगीत के अंतर्गत निर्धारित रागों को जानना
- चौकी कीर्तन परम्परा के इतिहास को जानना
- चौकी कीर्तन परम्परा के अतंर्गत शबद गायन को जानना तथा अध्ययन करना
- चौकी कीर्तन परम्परा के सैद्धान्तिक स्वरूप का अध्ययन करना
- चौकी कीर्तन परम्परा में प्रयुक्त होने वाले सांगीतिक तत्वों को खोजना तथा अध्ययन करना
- संधिप्रकाश रागों में निबद्ध शबद गायन के क्रियात्मक स्वरूप को जानना

- चौकी कीर्तन परम्परा में निर्धारित तालों को उजागर करना

- **शोध में प्रयुक्त होने वाली कार्य विधिः–**

प्रस्तावित शोध हेतु व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न स्त्रोतों से जानकारी एकत्रित करने हेतु यथायोग्य सर्वेक्षण किया जाएगा।

- **शोध के उपकरण** :– शोध का अध्ययन कार्य उपलब्ध पुस्तकों, पुस्तकालयों, पत्र–पत्रिकाओं, कलाकारों, रागियों, विद्वानों, गुरूद्वारों, गुरमत संगीत शिक्षकों से विचार–विमर्श के माध्यम से प्राप्त जानकारी टेपरिकार्डर, सी.डी. धवन्याकन सामग्री आदि जैसे – उपकरणों की सहायता से पूर्ण किया जायेगा।

- **विषय का परिसीमांकन** :– कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुए शोध को 10 प्रातः कालीन संधिप्रकाश रागों में तथा 10 सायंकालीन संधिप्रकाश रागों में परिसीमित कर दिया जाएगा।

- **अध्यायों का विभाजन** :–

  - **प्रथम अध्याय–**

  (i) सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

  - **द्वितीय अध्याय–**

  (i) गुरमत संगीत का ऐतिहासिक परिचय

  (ii) चौकी कीर्तन परम्परा का ऐतिहासिक परिचय

- **तृतीय अध्याय–**

(i) चौकी कीर्तन परम्परा का सैद्धान्तिक स्वरूप

(ii) चौकी कीर्तन परम्परा का क्रियात्मक स्वरूप

- **चतुर्थ अध्याय–**

(i) चौकी कीर्तन परम्परा का वर्तमान स्वरूप

(ii) चौकी कीर्तन परम्परा में निर्धारित रागों में स्वरचित संधिप्रकाश रचनाएँ

➢ **पंचम अध्याय–**

(i)- चौकी कीर्तन परम्परा के शबदों को संकलन

➢ **निष्कर्ष –**

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची


- **शोध प्रबन्ध :–**

1. गुरबाणी संगीत की विभिन्न गायन शैलियों का अध्ययन और उनका भारतीय संगीत के साथ सबंन्ध – डॉ– अजीत सिंह –गुरू नानक देव विश्वविद्यालय – 1997
2. गुरमत संगीत की कीर्तन परम्परा : – संगीत वैज्ञानिक अध्ययन –डॉ वरिंदर कौर – पंजाबी यूनिवर्सिटी – 2003
3. पंजाब की संगीत परम्परा में गुरमत संगीत का स्थान – डॉ राजेन्द्र सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला – 2001
4. श्री हरिंमदिर साहिब जी की कीर्तन परम्परा : – एतिहासिक परिपेक्ष – डॉ कमलजीत सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला – 2004
5. गुरमत संगीत की राग परम्परा : – संगीत वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ मनप्रीत सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला– 2011
6. गुरमत संगीत की शबद कीर्तन रचनाएँ : – विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ जबरजंग सिंह – पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला –2012

- **शोध पत्र :–**

1. हिन्दुस्तानी संगीत पर सिक्ख धर्म तत्व उसके सिद्धातों का प्रभाव – रेनू सचदेव धार्मिक परम्पराएँ एवं हिंदुस्तानी संगीत – राधा पब्लिकेशन – 1999
2. गुरमत संगीत में प्रयुक्त शास्त्रीय विद्या – डॉ गुरनाम सिंह – शबद सरोकार – मालवा साहित्य कला मंच, पटियाला, पंजाब– 2007
3. गुरू काव्य में संगीत का महत्व – डॉ0 वरयाम सिंह – खोज पत्रिका, गुरमत काव्य विशेष अंक– जग्गी, रतन सिंह– पंजाबी यूनिवर्सिटी–पटियाला – 2001

4. आसा की वार का सांगीतिक अध्ययन – जगीर सिंह – गुरमत मीमांसा – गुरमत प्रकाश धर्म प्रचार कमेटी S.G.P.C. अमृतसर–1982
5. चौथे प्रहर के बाद कीर्तन किस समय होना चाहिए – तजिंदर सिंह – अमृत वेला – गुरमत प्रचार सभा पटियाला, पंजाब – 2009
6. गुरबाणी सांगीतिक परिपेक्ष्य – अमृत पाल कौर – शबद संचार – रवि सहित प्रकाशन अमृतसर–2003
7. गुरबाणी काव्य रूप और गायन शैलियाँ – अंर्त सम्बन्ध – अमृत पाल कौर – गुरवाणी अध्ययन नव परिपेक्ष – निशांत प्रकाशन, फरीदाबाद–1990
8. गुरबाणी कीर्तन में निर्धारित रागों का महत्व – सतनाम सिंह – गुरमित प्रकाश – धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर – 2005
9. गुरबाणी संगीत – दर्शन सिंह नरूला – पंजाब का संगीत विरसा और विकास – Punjabi Writers Co-Opreative Industrial Society Ltd.-1995
10. गुरबाणी संगीत – डॉ दर्शन सिंह – स्वरूप, स्थिति एवं समाधान – The Sikh Art and Architecture – Department of Guru Nanak Sikh Studies Punjab University – 1987
11. कीर्तन परम्परा को गुरू अर्जुन देव जी की देन – डॉ0 जतिन्दर कौर – गुरमत प्रकाश – धर्म प्रचार कमेटी, S.G.P.C. – अमृतसर – 2011

- **पुस्तकें**

1. गुरमत संगीत की ऐतिहासिक विलक्षणता – डॉ जसबीर कौर – भाई चतर सिंह जीवन सिंह बाजार माई सेवा, अमृतसर– 2006
2. गुरमत संगीत परम्परा – मंजीत कौर – Twenty First Century Publications, Patiala-2005
3. गुरमत संगीत सागर – दयाल सिंह – गुरू नानक विद्या भंडार ट्रस्ट, नई दिल्ली– 2003

4. सिक्ख संगीत रीत (आसा की वार) – चंदन, कुलवंत सिंह (प्रो0) – भाई चरत सिंह जीवन सिंह – बाजार माई सेवा, अमृतसर – 2003
5. सिक्ख संगीत का विकास – डॉ0 देवन्द्रि सिंह, History research Department, Khalsa College - Amritsar – 1986
6. गुरमत संगीत परम्परा – मंजीत कौर – Twenty First Century Publications, Patiala-2005
7. गुरमत में संगीत का महत्व – प्रो0 अमरजीत सिंह – Guru Nanak Dev Mission, Patiala- 1992